Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2019 = 6.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, JULY-AUGUST, 2020, VOL- 8/60

प्राथमिक स्तर पर कहानी शिक्षण विधि के प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण का अध्ययन

मया शंकर यादव

पी-एच.डी शिक्षाशास्त्र (शिक्षा विद्यापीठ), म.गां. अं. हिं.वि.वि. वर्धा महाराष्ट्र

Mayashankar182@gmail.com

Abstract

प्राथमिक स्तर पर विभिन्न विषयों को सीखने के सम्बन्ध में बच्चों की रूचि में निरंतर कमी देखी जा रही है। प्राथमिक स्तर के बच्चों की आयु 6 से 14 साल तक की होती है। इस उम्र में बच्चों के अन्दर सुनकर सीखने की अत्यधिक अभिक्षमता होती है। बच्चे घर में माता-पिता, दादा-दादी एवं अन्य परिवारजनों की बातों को सुनकर ही बिना किसी अतिरिक्त प्रयास के सीख लेते हैं तथा उनमें कहानी-किस्सा सुनने की अत्यधिक ललक होती है। यदि बच्चों की इसी ललक का उनकी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में लाभ उठाना हो, तो कक्षा-कक्ष में अध्यापक द्वारा कहानी विधि से शिक्षण करना चाहिए। क्योंकि जब अध्यापक कहानी के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करते हैं तो बच्चे अत्यधिक रूचि और दिलचस्पी के साथ शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में भाग लेते हैं। परिणामस्वरूप अधिगम स्तर उच्च होता है। शिक्षा के इस स्तर के बच्चे किताब पढ़ने के बजाय मौखिक कहानियों को सुनना ज्यादा पसंद करते हैं। इसलिए बच्चों की इस अभिक्षमता के प्रति अध्यापक कितने जागरुक हैं तथा अपने शिक्षण प्रक्रिया में कहानी विधि को कितना प्रयुक्त करते हैं, यह जानना आवश्यक हो जाता है कि शिक्षा क्षेत्र में लगातार ऐसी शिक्षण विधियों के विकास के समन्वय का प्रयास किया जा रहा है, जो बच्चों में विषय को पढ़नेमें रुचि तथा बोधगम्यता प्रदान करते हैं। इसी क्रम में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में कहानी शिक्ष्ण विधि के प्रति शिक्षकों का दृष्टिकोणोंकैसा हैं। यही इस शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य हैं। इस सम्बन्ध में हुए अनेक शोध बताते हैं कि यह विधि लगभग प्रत्येक विषय का शिक्षण करने एवं उससे विषय की रुचिकर एवं बोधगम्य ढंग से प्रस्तुत करने में सक्षम हैं। शोध पत्र में यह प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है कि कहानी शिक्षण विधि किस प्रकार से विभिन्न विषयों के शिक्षण हेतु एक अत्यंत उपयोगी एवं महत्त्वपूर्ण विधि हैं और इस विधि का उपयोग कर शिक्षक किस प्रकार से रुचिकर एवं बोधगम्य बना सकते है तथा प्रस्तुत शोध-पत्र में इस विधि के प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण को भी जानने का प्रयास किया गया है।

बीज शब्द *:प्राथमिक शिक्षा की अवधारणा, कहानी शिक्षण विधि,शिक्षकों का दृष्टिकोण ।*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना

मानव विकास का सबसे महत्वपूर्ण एवं प्रमुख साधन शिक्षा हैं। शिक्षा मानव को असत्य से सत्य की ओर, अन्धकार से प्रकाश की ओर, अज्ञान से ज्ञान की ओर जाने के लिए प्रेरित करती हैं (पचौरी 2010)। शिक्षा मानव जीवन का एक अभिन्न अंग है (शर्मा 2013)। यह एक स्वाभाविक और सहज प्रक्रिया भी है जो व्यक्ति के जन्म से

मृत्युपर्यंत तक चलती रहती है (चौबे 2012)। साथ ही साथ व्यक्ति के जन्मजात गुणों का विकास करके उनके व्यक्तित्व को निखारती भी है और व्यक्ति को उसके कर्तव्यों का ज्ञान कराते हुए उनके विचार एवं व्यवहार में समाज के हित के लिए कार्य करती है। प्रत्येक समय उसका प्रभाव किसी न किसी रूप में अवश्य विद्यमान रहता है। मानव का अस्तित्व 'बिना शिक्षा के बिना पतवार के नाव' के सदृश है। इसकी आवश्यकता हरेक प्राणियों की आतंरिक एवं बाह्य शक्तियों के समुचित विकास करने में प्रमुखता रहती है। जिससे वह जिज्ञासा, कल्पना एवं तर्क के माध्यम से नवीन योगदान दे सके (ओझा 2017)। शिक्षा किसी राष्ट्र के नवनिर्माण एवं प्रगति की आधारशिला होती है। इसी के ऊपर राष्ट्र के गौरवशाली एवं ऐश्वर्यशाली प्रासाद की भव्य इमारत खड़ी होती है।कोठारी आयोग की रिपोर्ट में कहा गया है कि 'भारत के भाग्य का निर्माण उसकी कक्षाओं में हो रहा है'(पाठक एवं त्यागी 1967)। समाज में विभिन्न प्रकार की संस्थाओं द्वारा शिक्षा देने का कार्य किया जाता हैं। इन्हीं संस्थाओं को शिक्षा का साधन कहा जाता हैं। मानव को शिक्षा प्रदान करने के मुख्यतः तीन साधन है शिक्षा देने का कार्य औपचारिक अभिकरण उन संस्थाओं एवं संगठनों को कहा जाता हैं जो नियमानुसार संगठित होती हैं। इन संस्थाओं में शिक्षा की प्रक्रिया नियोजित ढंग से चलती रहती है। इस अभिकरण में विद्यालय आते हैं। औपचारिकेतर शिक्षा किसी निश्चित स्थान और समय पर नहीं दी जाती है। अनौपचारिक अभिकरण में औपचारिक अभिकरण की जटिलता एवं बाध्यता कम होती हैं। इनका प्रारंभ प्रायः उन बच्चों को ध्यान में रखकर किया जाता है जो अनिवार्य शिक्षा की परिधि में तो आते हैं किन्तु अनेक कारणों से वे विद्यालय नहीं आ पाते हैं। 6 से 14 वर्ष के ऐसे बच्चों के लिए यह अनौपचारिक शिक्षा हैं जो औपचारिक शिक्षा से वंचित रह जाते हैं (पाण्डेय 2010)।

शिक्षा के स्तर को तीन भागों में विभाजित किया गया हैं।पहले स्तर पर प्राथमिक शिक्षा द्वितीय स्तर पर माध्यमिक शिक्षा एवं तृतीय स्तर पर उच्च शिक्षा की व्यवस्था है। किसी भी देश का भविष्य वहां के बच्चों को मिलने वाली प्राथमिक शिक्षा पर निर्भर करती है। प्राथमिक शिक्षा जिस प्रकार की होगी। देश का भविष्य भी उसी प्रकार का होगा। प्राथमिक शिक्षा पर ही देश तथा उसके प्रत्येक नागरिक का विकास निर्भर करता है। इस स्तर की शिक्षा अन्य सभी स्तरों की शिक्षा की एक आधारशिला मानी जाती है। यह आधारशिला जितनी अधिक सुदृढ़ होगी। आगे की शिक्षा भी उतनी अधिक मजबूत और सफल होगी।

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

प्राथमिक शिक्षा

प्राथमिक शिक्षा का अर्थ होता हैं प्रारंभिक शिक्षा एवं मुख्य शिक्षा। औपचारिक शिक्षा व्यवस्था के प्रथम स्तर को प्राथमिक शिक्षा स्तर कहा जाता है। जिसे आमतौर पर शिक्षा का पहला चरण कहा जाता है जो पूर्व विद्यालयीय शिक्षा के बाद और माध्यमिक शिक्षा से पहले आता है। यदि बच्चों की आयु 6 या 7 वर्ष होने पर उनकी प्राथमिक शिक्षा प्रारंभ होती है तथा14 वर्ष की आयु होने तक चलती रहती है। अतः कक्षा1 से लेकर कक्षा 8 तक की शिक्षा को प्राथमिक शिक्षा कहा जाता है (गुप्ता 2015)। प्राथमिक शिक्षा से बच्चों में विभिन्न विषयों की एक बुनियादी समझ के साथ-साथ विभिन्न कौशल भी प्राप्त करते हैं जो उनके शेष शैक्षणिक जीवन मेंआधार का काम करती है और वह अपने जीवन भर उस कौशल का उपयोग करता है। देश के प्रत्येक बच्चे को शिक्षा प्रदान करना राज्य का कर्तव्य है (नेहरू)। ऐसा माना जाता है कि बच्चे राष्ट्र का भविष्य होते हैं। दरअसल बच्चे किसी भी राष्ट्र का भविष्य होने के साथ ही साथ उस राष्ट्र की धरोहर होते हैं। कोई भी राष्ट्र जो संसाधनों से भरपूर हो। उसे हमेशा ही मानव संसाधन की आवश्यकता होती है। किसी भी संसाधन का उपयोग करने के लिए मानव संसाधन की जरुरत होती है।

बच्चे के विकास में संज्ञानात्मक विकास, भावात्मक विकास, क्रियात्मक विकास एवं सीखने के प्रति रुझानों में विकास तथा दूसरों के प्रति रुख आदि में पहले 6 साल से 14 साल तक अत्यंत महत्त्वपूर्ण समयहोता है। शुरूआती वर्षों में बच्चे जिस तरह भाषा सीखते हैं। उस तरह की सरलता से वे उसे फिर कभी नहीं सीखते। बच्चों को अपने माता-पिता, दादा-दादी एवं अन्य पड़ोसियों से मिलने वाले विभिन्न प्रकार के अनुभवों को बार-बार दोहराये जाने से अत्यधिक तीव्र गति से सीखने में मदद मिलती है। वह अपने आस-पास के चीजों को देखने में सक्षम होते है। इसी उम्र में उनमें हर एक चीजों को अपने अनुभव के माध्यम से सीखते हैं(प्रसाद 2015)। बच्चों के सीखने में भाषा की बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है क्योंकि शुरुआती वर्षों में बच्चे मौखिक भाषा से ही सीखते हैं। मौखिक भाषा सभी मनुष्यों एवं समाज का एक अनिवार्य हिस्सा है। हर बच्चा अपनी मातृभाषा/ पहली भाषा को स्वाभाविक रूप से बिना किसी प्रयास के ही सीख जाता है। इससे भाषाओं को सीखने के लिए उनमें प्राकृतिक प्रवृत्ति एवं विशेषताएं प्रदर्शित होती हैं। जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते हैं उनके द्वारा औपचारिक या अनौपचारिक रूप से कई और भाषाएँ सीखते हैं। मौखिक भाषा अर्जित करने के लिए कहानी सुनाना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। इससे बच्चों

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

में मातृभाषा के साथ जुड़ने का अवसर मिलता है और कहानियों के द्वारा सभी आयुवर्ग के लोगों को विशेष रूप से बच्चों की कल्पना को भी एक उड़ान मिलती है।

दादा-दादी या नाना-नानी से कहानियाँ सुनने के लिए बच्चों में आकर्षण का एक अन्य कारण भी था। वह था- उनकी कहानी सुनाने की आकर्षण कला ।हमारे यहाँ एक ज़माने में किस्सा-गो हुआ करते थे या पेशेवर किस्सा सुनाने वाले होते थे।घर के दादा-दादी भी कहानी सुनाने की कला में कुछ कम माहिर न हुआ करते थे। वास्तव में कहानी के साथ-साथ, उसे सुनाने की कला में सोने में सुहागे का काम किया करती थी। वे उन कहानियों को बड़े ही नाटकीय और प्रभावशाली अंदाज में सुनाते थे और बच्चे उन्हें सुनते हुए अपनी कल्पना में उस चित्र को अपने मस्तिष्क में बना लेते है।

कहानी शिक्षण की पृष्ठभूमि

कहानियों का इतिहास उतना ही पुराना है जितना स्वयं मानव का इतिहास है(दीक्षित2010)।भारतीय उपमहाद्वीप में कहानी लेखन की परंपरा बहुत पुरानी है। ऋग्वेद जिसे संसार के सबसे पुराना ग्रन्थ होने का गौरव प्राप्त है, में अनेक कहानियाँ बताई गई हैं। प्रत्येक कहानी का कोई न कोई उद्देश्य है।कहानी सुनना-सुनाना, हजारों वर्षों से भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है।कहानियाँ तो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित की जाती रही है। छोटे बच्चों को कहानियाँ सुनाई जाती हैं और जिस समाज में पैदा हुए हैं।उसके कुछ नियम व मान्यताओं को कहानियाँ हमें समझाती है।लोक कथाओं के साथ-साथ भारतीय समकालीन शिक्षकों द्वारा लिखित एवं मौखिक कहानियों एवं किस्सों को प्राथमिक स्तर की कक्षाओं के लिए एक समृद्ध शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के रूप में प्रयोग करते रहे हैं।कहानियों को सुनना, पढ़ना विद्यार्थियों को स्वयं अपनी समझ बनाने में समर्थ बनाती है।कहानी और किस्सा नए विषयों एवं शब्दावली का परिचय एवं अमूर्त विचारों तथा वर्तमान वैज्ञानिक समस्याओं को समझाने में प्रयुक्त होती हैं।

कहानी-कथन को "भाषा, स्वर के उतार-चढ़ाव, शारीरिक-गति, हाव-भाव आदि के उपयोग से श्रोताओं के लिए किसी कहानी की घटनाओं और चित्रों को सजीव बनाने की कला के रूप" में परिभाषित किया जा सकता है। कहानी शिक्षण विधि का सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण पहलू यह है कि कहानी को पूरा करने और उसे फिर से बनाने के लिए श्रोता किस प्रकार से कहानी के दृश्य और विवरण को अपने मस्तिष्क में विकसित करते हैं।

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

कहानी क्या है ?

कहानियाँ भी अपनी प्रकृति, सुनने/ पढ़ने वालों एवं परिस्थितियों के अनुसार अपने आप को अलग-अलग रूपों में ढ़ाल सकती हैं। कहानी किसी यात्रा का वर्णन है।किसी कहानी में हम एक या एक से अधिक पात्रों की यात्रा का अनुसरण करते हैं।ये पात्र किन्ही बाधाओं को पार करते हुए किसी लक्ष्य को प्राप्त करने में लगे होते हैं।1-एक वास्तविक या काल्पनिक कथा 2- किसी गद्य का छोटा काल्पनिक टुकड़ा 3- किसी कल्पना या उपन्यास की योजना 4- तथ्यों का लेखा जोखा 5- एक पौराणिक कथा।

कहानी किसी सच्ची या काल्पनिक घटना का इस प्रकार का वर्णन करती है कि जिसमें कहानी सुनने वाला सुनकर कुछ अनुभव करता है या कुछ सीखता है।कहानी जानकारी, अनुभव, दृष्टिकोण या रुख को समझाने का एक माध्यम भी हैं।हर कहानी के लिए एक कहानीकार और एक सुनने वाला होता है। माध्यम चाहे कोई भी हो, यह जरुरी है कि एक कहानी कहने वाला और एक कहानी को ग्रहण करने वाला होना ही चाहिए।

कहानियाँ आती कहाँ से हैं ?

प्रत्येक व्यक्ति रोज कहानियाँ कहता हैं- ज्यादातर अपने आप से । किसी विषय पर अपने विचार बनाने, भविष्य के बारे में कल्पना करने, अपने आपको कुछयाद दिलाने, समझाने आदि के लिए हम अपने आपको कहानी सुनाते हैं। सभी के अन्दर कहानी सुनाने का एक कौशल होता है और सामग्री से भरपूर होता है। यही वो जगह है जहाँ कहानियों का जन्म होता है। इस प्रकार पहले कहानीकार और कहानी के पहले श्रोता सभी स्वयं ही हैं।

शिक्षक और शिक्षार्थी

बालक कल्पना के विषय में ऐसी शास्त्रीय बातें भले ही न जाने, मगर वह उन्हें जीना बखूबी जानता है। उसकी आरंभिक कल्पनाओं को किसी खास रूपाकार में बांधना असंभव होता है।बुडापेस्ट विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. के. स्टेलजेर ने शोधकर्त्ता के अपेक्षित जिन आठ गुणों को जरुरी बताया है, उनमें तत्परता पाँच प्रतिशत, खुला मन दस प्रतिशत, दृष्टि की विशालता15 प्रतिशत, कल्पनाशक्ति तीस प्रतिशत, निर्णय दक्षता पंद्रह प्रतिशत, विषय का सांकेतिक ज्ञान दस प्रतिशत, अनुभव दस प्रतिशत तथा दायित्वबोध पाँच प्रतिशत । इस विश्लेषण को ध्यान से देखें तो कल्पना को सर्वाधिक महत्त्व दिया गया है। इससे यह निष्कर्ष सामने आता है कि उच्च कल्पनाशक्ति वैज्ञानिक शोधों में मददगार सिद्ध होती है।छोटे बच्चों के संपर्क में आने वाली प्रत्येक वस्तु को वह जिज्ञासा एवं कौतुहल की दृष्टि से परखाना चाहता है। वस्तु के विषय में बंधा-बंधाया सच उसे स्वाकार्य नहीं होता है।नयेपन की खोज उसके

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

उतावलेपन की सीमा तक जाकर कर सकता है।बच्चे अपने कल्पना जगत को अपनी ही तरह गढ़ते है। बच्चों की उम्र बढ़ने के साथ उनकी बुद्धि सामर्थ्य का विकास भी होता है और अपने माता -पिता एवं परिवार के किसी सदस्य के साथ सर्वाधिक सन्निकट होता है तो उसका कल्पनाजगत ही है जोबच्चों के कल्पनालोक का सर्वाधिक हिस्सा पशु-पक्षियों, खेल-खिलौने, परियां, पेड़-पौधे आदि घेरते हैं। उन्हीं से वह अपनी सृजनात्मकता में रंग भरता है।

गिजुभाई बधेका ने अपनी पुस्तक 'दिवास्वप्न' में स्पष्ट रूप से बताया है कि बच्चों की कक्षा को कहानी के माध्यम से प्रारम्भ करने पर बच्चें किसी भी चीज को बड़े ही एकाग्रचित होकर सुनते है और कहते है कि किसी भी बच्चे के बोलने या हिलने डुलने की आवाज तक नहीं आती है।पूरे कक्षा-कक्ष में सन्नाटा छाया रहता है।बच्चे आसपास की कक्षाओं से लगातार शोर के प्रति नाराजगी व्यक्त करते है।बच्चों से जब यह कहा जाता है कि कहानी बीच में ही बंद कर देते है तोबच्चे कहते है कि कहानी जारी रखिये,कहानी जल्दी सुनाओं ताकि पूरी हो सके और तो और कहानी में उन्हें आनंद भी आता है।मांटेसरी मानती थी कि बच्चों में स्वयं एक स्वाभाविक शिक्षक होता है।

शिक्षकों का दृष्टिकोण

शिक्षक द्वारा प्रत्येक विषय के आयामों की विविधताओं के उपयोग का कौशल सीधे-सीधे बच्चों की प्रकृति, व्यक्तित्व एवं उनकी रुचियों को ध्यान में रखकर कर सकते हैं।बच्चों को अच्छी तरह से सीखने में सहायता करने के उतरदायित्व से सम्बंधित है। शिक्षक का बच्चों के प्रति समझ उन्हें अपेक्षित अधिगम लक्ष्यों के प्रति ध्यान केन्द्रित करने में सहायता प्रदान करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती है।बच्चों की क्षमताओं एवं उनकी विभिन्न रुचियों के लिए यह शिक्षण विधि सीखने के अनेकतरीकेप्रदान करतीहैं।

कक्षा में कहानियों के प्रयोग के तरीके

सबसे पहले बच्चों को कहानी के सुनाने से पहले उनके अन्दर कहानी सुनने की ललक उत्पन्न करनी चाहिए। जिससे उनकी ललक कहानी सुनने के प्रति बनी रहे। बच्चों की मानसिक स्तर परही शिक्षको को कहानियों का चयन करना चाहिए।इसके बाद विषयवस्तु की महत्त्वपूर्ण तथ्यों एवं घटनाओं की क्रमबद्ध ढंग से व्यवस्थित करना।उसके बाद उस कहानी की योजना बनाना । साथ ही साथ यह भी ध्यान रखना आवश्यक हैं कि पाठ में कहानी का प्रयोग कैसे और कबकरना चाहिए?शिक्षक को एक रोचक कहानी वह होती है जिसमें निम्नलिखित गुण होते है-कहानी में प्रारंभ से अंत तक एक परिचय, स्पष्ट विवरण,विकास एवं एक परिणाम के साथ स्पष्ट होना

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

चाहिए।प्रमुख विषयवस्तु की पुनरावृत्ति पर बल, बच्चों की भावनाओं और संवेदनाओं की अपील करना ।कहानियाँ कक्षा शिक्षण के लिए बहुत सशक्त माध्यम होती हैं। वे मनोरंजक, प्रेरणादायक एवं उत्तेजक होती हैं। इस शिक्षण विधि में बच्चों के रोजमर्रा के जीवन से कल्पना की दुनिया में सैर कराती हैं। नए विचारों को सीखने की प्रेरणा भी देती है। उनकी भावनाओं को समझने में मदद भी करती हैं। समस्याओं के विषय में वास्तविकता से अलग सन्दर्भ में सोचने के लिए विवश करती हैं। भारत के सन्दर्भों में, जहाँ बहुसांस्कृतिक समाज है। कहानी शिक्षण विधि का स्कूलों में शिक्षणशास्त्र का एक सशक्त माध्यम हो सकती हैं।राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रुपरेखा इस बात की अनुशंसा करती है कि स्कूली ज्ञान को समुदाय के ज्ञान से जोड़ा जाए।विभिन्न समुदाय में ज्ञान के संसाधन के रूप में प्रचलित कहानियाँ, स्कूली को समुदाय से जोड़ने का एक अच्छा साधन हैं।कहानियाँ बच्चों को समूह में चुप्पी तोड़ने, समुदाय से सीखने, कहानी लिखने, कहानी की घटनाओं पर आधारित रचनात्मक चित्र बनाने और अर्थपूर्ण सीखने के अनुभव बनाने के लिए प्रेरित करती हैं। स्कूलों में यह महत्त्वपूर्ण विधा बच्चों के लिए उपयोगी शिक्षण उपकरण है। कहानी के उपयोग से विषयों में भी रोचकता आ जाती है।भाषा का कहानी कहने की कला से स्वाभाविक जुड़ाव होता है। दूसरे विषयों में भी कहानी के उपयोग से जाँच पड़ताल या खोजबीन का काम किया जा सकता है।

निष्कर्ष

उक्त समस्त अध्ययन के उपरांत हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते है किकहानी शिक्षण विधि प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी है।कहानी कहते समय शिक्षकों को बच्चों के मानसिक स्तर पर उतरकर कहनाबेहतर माना जाता है।शिक्षक द्वारा कहानी सुनाते समय बच्चे एकाग्रचित होकर सुनते हैं।जिससे विषवस्तु उनके मन मस्तिष्क में बैठ जाता है। इससे उनके के प्रति बच्चे आकर्षित होते हैं।इस विधि के प्रति शिक्षकों का रवैया भी अनुकूल होना चाहिए।साथ ही साथ पाठ्यवस्तु पर उनका पूर्ण अधिकार होने से कहानी सुनाने का भाव प्रवाह बना रहता है।विषयवस्तु को प्रारंभ करने से पहले स्वयं भी उस कहानी को भलीभांति पढ़ना चाहिए।जिससे कहानी सुनाने में पहले से अधिक आनंद लेते हुए शिक्षक कहतेहैं। उनके अन्दरकहानी सुनानेका कौशल विकसित हो जाता है।शिक्षक को ऐतिहासिक कहानियों को क्रमबद्ध कालक्रम के अनुसार सुनाना चाहिए तथा बच्चों को जो भी कहानियाँ सुनाई जाय वे जीवन गाथाओं के रूप में हो ।बच्चों को उनके परिवेश से जोड़कर कहानी सुनाना चाहिए।गिजुभाई भाई बधेका ने बच्चों को किसी भी विषयवस्तु को सिखाने के लिए कहानी शिक्षण विधि का

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सुझाव दिया है।इन समस्त विश्लेषणों के आधार पर कह सकते है कि प्राथमिक स्तर पर बच्चों को किसी भी विषय की विषयवस्तु को कहानी शिक्षण विधि से अत्यन्त सहजता से सिखाया जा सकता है।

सन्दर्भ

ओझा,ए.के.(2017). प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर छात्र एवं छात्राओं के नामांकन दर पर शिक्षा के अधिकार अधिनियम के प्रभाव का अध्ययन,इंटरनेशनल जर्नल्स ऑफ़ एप्लाइड रिसर्च,3(9). 191-194.

गुप्ता, एस. पी. (2015).भारतीय शिक्षा का इतिहास विकास एवं समस्याएँ, इलाहाबाद: शारदा पुस्तक भवन.

चौबे,एस.पी.&चौबे,ए.(2012). शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, मेरठ: इंटरनॅशनल पब्लिशिंग हॉउस, पृष्ठ संख्या 16.

दीक्षित,ए.के.(2010). हमें कहानियाँ अच्छी क्यों लगती हैं ? नयी दिल्ली : प्राथमिक शिक्षक, पृष्ठ संख्या 32.

पचौरी,जी.(2010).उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक,मेरठ : लायल बुक डिपो मेरठ, पृ. सं. 01.

पाठक,पी.डी.&त्यागी,जी.एस.डी.(1967).शिक्षा आयोग: कोठारी(सुझाव एवं समीक्षा), आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर,पृ.सं.12.

बधेका,जी.(2007). दिवास्वप्न,दिल्ली : प्रकाशन संस्थान,पृष्ठ संख्या 1.

यादव,पी.(2018).पूर्व प्राथमिक स्तर पर हिंदी भाषा का शिक्षण नयी दिल्ली : प्राथमिक शिक्षक, वर्ष 42,अंक 4, पृ.सं.59.

रमेश,डी.(2016). ख़ुशी खोजें स्कूल में,नई दिल्ली : सस्ता साहित्य मंडल,पृ. सं. 80.

राजपूत,जे.एस.(2019). शिक्षा नीति का प्रारूप, मातृभाषा और शिक्षक, नयी दिल्ली: जनसत्ता समाचार पत्र.https://www.jansatta.com/sunday-magazine/after-a-long-wait-the-draft-of-new-policy-of-education-has-been-placed-before-the-country/1099325/

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रुपरेखा 2005. एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.

https://www.open.edu/openlearncreate/mod/oucontent/view.php?id=79971&printable=1

शर्मा,एस.आर.(2013).शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार,पियर्सन : डोरलिंग किंडरस्ले (इण्डिया) पीवीटी लिमिटेड,पृ.सं.22.

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies